



ज्योतिष, रत्न, रोग, एवं घरेलु उपाय

ब्रेन ट्यूमर एक बड़ी बीमारी

श्री राधेय ज्योतिष कार्यालय भोपाल इंदोर

पन्ना, पुखराज, मूंगा, एक ही अंगूठी में
ब्रेन ट्यूमर के लिए धारण करें।

ज्योतिष द्वारा ब्रेन ट्यूमर रोगोपचार के लिए संपर्क करें
महर्षि राधेय शास्त्री 09630212111



Astrologer
Radhey Sharma

Bollywood Astrologers

*DR Kuldeep Dubey
Indore High Court*

*Maharishi Radhey Shastri
Astrology Martand*



कोर्ट कचहरी से निपटारा
प्रेम विवाह में आ रही हो बाधा
संतान विवाह एवं संधि
फिल्मी दुनिया में भविष्य
राजनीति कैरियर
गृह वास्तु दोष निवारण
रत्न धारण हेतु संपर्क करें
09630212111

ॐ

श्री राधेय

ज्योतिष कार्यालय
(भोपाल) इंदौर



Astrologer
Radhey Sharma

मेष राशि की शारीरिक संरचना

इनके तीखे नैन नक्श होते हैं उन्त ठोड़ी, नाक और भरा हुआ उपरी ओंठ। आंखें दूरस्थ दूरी पर होती हैं भौंहे घनी होती हैं। इनका बोलने का ढंग भड़कीला होता है। ये चलने में तो तेज होते हैं पर सलीका बिल्कुल नहीं होता है। ये औसत ऊँचाई के होते हैं और इनका रंग दबा हुआ होता है। उनकी उपस्थिति विवादपूर्ण हो सकती है। ये आमतौर पर भड़कीले या सनकी प्रतीत होते हैं। अक्सर प्रफूल्ल, ऊर्जावान और अपरिष्कृत दिखाई पड़ते हैं। ये लाल रंग पसंद करते हैं। दरअसल, ये विचारशीलता से ताल्लुक नहीं रखते हैं। महर्षि राधेय शास्त्री

मेष राशि के जातको की आदतें :

इन्हे ध्यान आकर्षित करना अच्छा लगता है यदि इनका बस चले तो ये दुसरे को धक्का दे कर उसकी जगह ले लेंगे। इनका यह व्यवहार इन्हे कम समय में सफलता तो दिलाता है पर इनके रिश्ते इसके लिए बलि चढ़ जाते हैं। इन्हे जिम्मेदारियां देने से इनका स्वार्थीपना तो कम होता है। ये पैसे बचाने से ज्यादा खर्च करने में ध्यान देते हैं। ये शायद ही कभी अपना वित्त प्रबंधन देखते हैं। महर्षि

मेष राशि का स्वास्थ्य

ऊर्जा, शक्ति और ताकत से भरपूर होते हैं। इन्हे सिर, पेट और किडनी से संबंधित बिमारियां होने की संभावना रहती है। इसके लिए इन्हे अतिरिक्त देखभाल की आवश्यकता होती है अन्यथा माइग्रेन, अपच या किडनी में पत्थर होने की संभावना रहती है। ये सब बहुत अधिक तनाव होने या खान-पान की गलत आदतों की वजह से हो सकता है। आवेगी होने के कारण दर्घटना की संभावना अधिक रहती है पर ये काफ़ी मजबूत होते हैं। महर्षि राधेय शास्त्री

शीघ्र सफलता चाहिए
जरूर मिलिए



- [१]मानसिक-शारीरिक परेशानी [२]आर्थिक-व्यावसायिक-रोजगार-उन्नति में रुकावट - किसी द्वारा व्यवसाय बंधित करना सम्बन्धी परेशानी
[३]सट्टा-लाटरी-शेयर-कमोडिटी-सेल्स से जुड़े लोगो में उन्नति-सफलता की समस्या
[४]पारिवारिक कलह -क्लेश ,मनमुटाव -मतभेद
[५]पति-पत्नी में मतभेद ,क्लेश ,विच्छेद की स्थिति [६]पति-पत्नी के किसी अन्य से सम्बन्ध या आशंका के कारण पारिवारिक विघटन-क्लेश-की स्थिति
[७]अधिकारी अथवा अन्य द्वारा उत्पीडन , नौकरी में उन्नति ,शांति- सफलता
[८]साझेदारी के विवाद ,व्यावसायिक विवाद[९]संतान सम्बन्धी समस्या यथा संतान हीनता ,संतान का बिगड़ल हो जाना
[१०]वायव्य बाधा [भूत-प्रेत] ,तांत्रिक क्रिया , अभिचार,किये -कराये सम्बन्धी समस्या
[११]ग्रह बाधा ,पित्र दोष [१२]घर-परिवार-व्यक्ति पर नकारात्मक उर्जा / शक्ति का प्रभाव
[१३]विवाह बाधा ,प्रेम विवाह ,आदि आदि[१४]किसी प्रकार की पारलौकिक समस्या
[१५]शत्रु -विरोधी ,मकदमा -विवाद ,संपत्ति विवाद ,अवैध कुब्जा सम्बन्धी परेशानी

रत्नों की समस्त जानकारी प्राप्त करने हेतु संपर्क करें श्री राधे ज्योतिष कार्यालय **09630212111**

भीष्मक मणि यह दो प्रकार की होती है-

1. मोहिनी भीष्मक मणि। **2.** कामदेव भीष्मक मणि।

मोहिनी भीष्मक मणि- इसे अमृत मणि भी कहते हैं। यह सरसों पुष्प या तोरी पुष्प या गुलदाऊदी पुष्प अथवा केले के अति नवीन पत्र के समान पीले रंग की होती है तथा हीरे की तरह चमकती है। कामदेव भीष्मक मणि- यह कृष्ण वर्ण की, शहद के समान वर्ण का अथवा दही व फिटकरी के मिश्रण से बने रंग के समान होती है तथा यह स्निग्ध स्वच्छ तथा सुंदर रंग व कांति वाली होती है।

प्रयोग- महर्षि राधेय शास्त्री

सूर्य के आद्रा नक्षत्र में होने तथा मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु अथवा कुम्भ राशि पर चन्द्रमा के होने से मोहिनी भीष्मक मणि को रुई में लपेट कर पूर्व दिशा में पानी में डुबाकर रख देते हैं। तत्पश्चात् वृषभ, कर्क, कन्या, वृश्चिक अथवा मकर राशि पर चन्द्रमा के आने पर मणि को पश्चिम दिशा में रखकर विधिपूर्वक पूजन करने से अच्छी वर्षा होती है।

प्रयोग- महर्षि राधेय शास्त्री

मेष राशि पर यह सूर्य के होने से रोहिणी नक्षत्र अथवा पूर्णमासी के दिन व मंगलवार के दिन तेलमणि को जिस खेत में **4-5** हाथ गहरे गड्ढे में खोदकर गाड़ दिया जाए व मिट्टी से ढँककर सींचा जाए तो सामान्य से बहुत अधिक अन्न उत्पन्न होता है।



Astrologer Radhey Sharma
09630212111

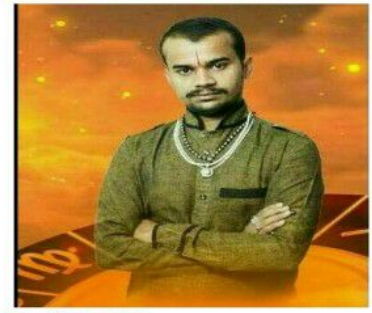
शीघ्र सफलता चाहिए जरूर मिलिए

**Astrologer
Radhey Sharma**



रत्न द्वारा जागृत होगा भाग्य संपर्क करें श्री राधेय ज्योतिष कार्यालय

लग्न और रत्न



लग्न स्थान को शरीर कहा गया है। कुण्डली में इस स्थान का अत्यधिक महत्व है। इसी भाव से सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विचार किया जाता है। लग्न स्थान और लग्नेश की स्थिति के अनुसार जीवन में सुख दुःख एवं अन्य ग्रहों का प्रभाव भी देखा जाता है। कुण्डली में षष्ठम, अष्टम और द्वादश भाव में लग्नेश का होना अशुभ प्रभाव देता है। इन भावों में लग्नेश की उपस्थिति होने से लग्न कमजोर होता है। लग्नेश के नीचे प्रभाव को कम करने के लिए इसका रत्न धारण करना चाहिए। महर्षि राधेय शास्त्री

भाग्य भाव और रत्न

9630212111

जीवन में भाग्य का बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। भाग्य कमजोर होने पर जीवन में कदम कदम पर असफलताओं का मुंह देखना पड़ता है। भाग्य मंदा होने पर कर्म का फल भी संतोष जनक नहीं मिल पाता है। परेशानियां और कठिनाइयां सिर उठाए खड़ी रहती हैं। मुश्किल समय में अपने भी पराए हो जाते हैं। भाग्य का घर जन्मपत्री में नवम भाव होता है। भाग्य भाव और भाग्येश अशुभ स्थिति में होने पर नवमेश से सम्बन्धित रत्न धारण करना चाहिए। भाग्य को बलवान बनाने हेतु भाग्येश के साथ लग्नेश का रत्न धारण करना अत्यंत लाभप्रद होता है। महर्षि राधेय शास्त्री

तृतीय भाव और रत्न

जन्म कुण्डली का तीसरा घर पराक्रम का घर कहा जाता है। जीवन में भाग्य का फल प्राप्त करने के लिए पराक्रम का होना आवश्यक होता है। अगर व्यक्ति में साहस और पराक्रम का अभाव हो तो उत्तम भाग्य होने पर भी व्यक्ति उसका लाभ प्राप्त करने से वंचित रह जाता है। आत्मविश्वास का अभाव और अपने अंदर साहस की कमी महसूस होने पर तृतीयेश से सम्बन्धित ग्रह का रत्न पहना लाभप्रद होता है। महर्षि राधेय शास्त्री

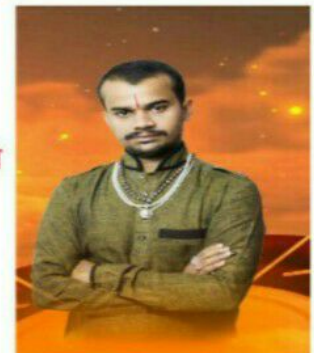
कर्म भाव और रत्न

कर्म से ही भाग्य चमकता है। कहा भी गया है "जैसी करनी वैसी भरनी" ज्योतिष की दृष्टि से कहें तो जैसा कर्म हम करते हैं भाग्य फल भी हमें वैसा ही मिलता है। भाग्य को पब्रल बनाने में कर्म का महत्वपूर्ण स्थान होता है। भाग्य भाव उत्तम हो और कर्म भाव पीड़ित तो इस स्थिति भाग्य फल बाधित होता है। कुण्डली में दशम भाव कर्म भाव होता है। अगर कुण्डली में यह भाव पीड़ित हो अथवा इस भाव का स्वामी कमजोर हो तो सम्बन्धित भाव स्वामी एवं लग्नेश का रत्न पहनाना मंगलकारी होता है। महर्षि राधेय शास्त्री

रत्न और सावधानी

रत्न धारण करते समय कुछ सावधानियों का ख्याल रखना आवश्यक होता है। जिस ग्रह की दशा अन्तर्दशा के समय अशुभ प्रभाव मिल रहा हो उस ग्रह से सम्बन्धित रत्न पहनना शुभ फलदायी नहीं होता है। इस स्थिति में इस ग्रह के मित्र ग्रह का रत्न एवं लग्नेश का रत्न धारण करना लाभप्रद होता है। रत्न की शुद्धता की जांच करवाकर ही धारण करना चाहिए धब्बेदार और दरारों वाले रत्न भी शुभफलदायी नहीं होते हैं रत्न धारण हेतु संपर्क करें महर्षि राधेय शास्त्री

- [१]मानसिक-शारीरिक परेशानी [२]आर्थिक-व्यावसायिक-रोजगार-उन्नति में रुकावट -
केसी द्वारा व्यवसाय बंधित करना सम्बन्धी परेशानी
[३]सट्टा-लाटरी-शेयर-कमोडिटी-सेल्स से जुड़े लोगो में उन्नति-सफलता की समस्या
[४]पारिवारिक कलह -क्लेश ,मनमुटाव -मतभेद
[५]पति-पत्नी में मतभेद ,क्लेश ,विच्छेद की स्थिति [६]पति-पत्नी के किसी अन्य से सम्बन्ध
या आशंका के कारण पारिवारिक विघटन-क्लेश-की स्थिति
[७]अधिकारी अथवा अन्य द्वारा उत्पीड़न , नौकरी में उन्नति ,शांति- सफलता
[८]साझेदारी के विवाद ,व्यावसायिक विवाद[९]संतान सम्बन्धी समस्या यथा संतान
हीनता ,संतान का बिगड़ल हो जाना
[१०]वायव्य बाधा [भूत-प्रेत],तांत्रिक क्रिया , अभिचार,किये -कराये सम्बन्धी समस्या
[११]ग्रह बाधा ,पित्र दोष [१२]घर-परिवार-व्यक्ति पर नकारात्मक उर्जा / शक्ति का प्रभाव
[१३]विवाह बाधा ,प्रेम विवाह ,आदि आदि[१४]किसी प्रकार की पारलौकिक समस्या
[१५]शत्रु -विरोधी ,मकदमा -विवाद ,संपत्ति विवाद ,अवैध कुब्जा सम्बन्धी परेशानी



संपर्क सूत्रः श्री राधेय ज्योतिष कार्यालय

उपरोक्त सभी समस्याओं का हल तंत्र और ज्योतिष द्वारा संभव हो जाता है 9630212111

आपके नौकरी के योग क्या बोल रहे हैं जानने के लिए संपर्क करें श्री राधेयज्योतिष कार्यालय

कुंडली के पहले भाव अतार्थ लग्न और लग्न के स्वामी गृह को देखेंगे ! यदि लग्न में शुभ ग्रहों की स्थिति और लग्न का स्वामी एक शुभ भाव में स्थापित हो तो वह अपनी दशा में जातक को उच्च पद तक पहुंचा सकता है, परन्तु शर्त यह है की उस गृह की दशा आपकी मध्यम उम्र में आनी चाहिए, यदि ये दशा आपके बुढ़ापे में आयगी को ज्यादा फायदा नहीं दे पायगी! कुंडली का पहला, दूसरा, चौथा, सातवा, नौवा, दसवा, ग्यारहवा घर तथा इन घरों के स्वामी अपने कार्य काल में जातक को कामयाबी प्रदान करते है ! कुछ ज्योतिषी छटवे भाव या इसके स्वामी को स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं मानते, और यह बात सत्य भी है परन्तु और भी कई परिस्थियों के आधार पर ही हम ऐसा कह सकते है अन्यथा मेरे अनुभव में छठा भाव तथा इसका स्वामी गृह अपनी दशा में आपको एक उच्च पद का अधिकारी बना सकता है क्योंकि छठा भाव और इसका स्वामी जातक के नौकरी पेशा से सम्बन्ध रखता है!

दसवा और ग्यारहवा भाव तथा इनके स्वामी ग्रहों का भी हमारी तरक्की से गहरा सम्बन्ध होता है! क्योंकि दसवा भाव हमारे रोजगार से और ग्यारहवा भाव हमारी आय से सम्बन्ध रखता है ! अब यदि इन भावों में शुभ ग्रहों की स्थिति और इन भावों के स्वामी शुभ स्थिति में हो और इन ग्रहों की दशा आपकी मध्यम उम्र में आ जाये तो आप एक बेहतरीन जीवन शैली, नौकरी और उच्च पद के अधिकारी बन सकते है और एक अच्छी आय कमा सकते है !

श्री राधेय ज्योतिष कार्यालय भोपाल इंदौर 09630212111

मूंगा रत्न के बारे में राशि अनुसार जानकारी महर्षि राधेय शास्त्री

मेष राशि :- इस राशि वाले व्यक्तियों के लिए मूंगा सदैव लाभकारी व शुभदायक है. क्योंकि मूंगा रत्न इस राशि का रत्न है.

मंगल इस राशि का स्वामी भी है. इससे इनकी आयु में वृद्धि, स्वास्थ्य में उन्नति तथा यश की प्राप्ति होगी.

वृष राशि :- इस राशि के लिए मूंगा रत्न कष्टकारी होगा. इस राशि वालों को इसको पहनने की कल्पना भी नहीं करनी चाहिए.

मिथुन राशि :- इस राशि वालों को मूंगा कभी भी धारण नहीं करना चाहिए. क्योंकि इस

राशि वालों को मूंगा रत्न रोगों की उत्पत्ति करेगा इसका प्रभाव उलटा पड़ेगा.

कर्क राशि :- इस राशि वालों को मूंगा धारण करना अत्यंत शुभ फलदायी होगा. यदि इस राशि वाले लोग मोती और

मूंगा एक साथ धारण करे तो उन्हें सन्तान का सुख, यश, मान और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. सभी कुछ प्राप्त करेगा.

सिंह राशि :- मूंगा इस राशि वाले व्यक्तियों के लिए अति उत्तम है. इसके धारण करने से मानसिक शान्ति,

घर तथा भूमि लाभ, धन लाभ, यश की प्राप्ति होती है. उसका भाग्य उज्ज्वल होता है. शुभ राज योग कारक माना जाता है

यदि मूंगा रत्न माणिक्य के साथ धारण करे तो आश्चर्यजनक लाभ प्राप्त होने लगता है. मंगल और सूर्य दशा में अत्यंत लाभकारी होता है..

कन्या राशि :- इस राशि वालों को मूंगा रत्न बहुत अधिक हानिकारक है. दुर्घटनाये,

कष्ट देगा. छोटे भाइयों को कष्ट देने में प्रबल होगा. मृत्यु का बुलावा होगा.

तुला राशि :- इस राशि वालों को मूंगा कभी भी धारण नहीं करना चाहिए आयु को खतरा होने की

संभावनाएँ बढ सकती है. अचानक दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ सकता है.

वृश्चिक राशि :- इस राशि वाले व्यक्तियों के लिए मूंगा धारण करना सुख-समृद्धि कारक तथा कल्याणकारी है.

इसको धारण करने से निश्चय ही व्यक्ति की आयु में वृद्धि, स्वास्थ्य में उन्नति, तथा

यश की प्राप्ति होगी. आशा से भी अधिक सुखों को भोगेगा.

धनु राशि :- इस राशि वाले मूंगा रत्न धारण करके सुख, यश, धन, समृद्धि, भाग्य में

उन्नति तथा सामाजिक प्रतिष्ठा आदि की प्राप्ति होगी. सन्तान सुख के लिए उत्तम रहेगा.

मकर राशि :- यदि इस राशि का व्यक्ति मूंगा रत्न धारण करे तो उसे जमीन जायदाद,

वाहन, घर, धन की प्राप्ति, तथा माता का विशेष सुख प्राप्त होगा.

कुम्भ राशि :- इस राशि वालों को मूंगा रत्न धारण करना वर्जित अर्थात् बिलकुल मना है. हानि कारक रहेगा.

छोटे भाई एवं बहनों के लिए कष्टकारी तथा सन्तान के सुख में कमी करेगा. शारीरिक कष्ट भी हो सकते हैं.

मीन राशि :- इस राशि के लोगों के लिए सदैव ही लाभकारी होगा. यदि मूंगा रत्न

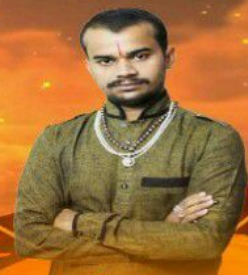
पुखराज रत्न के साथ धारण करे तो भाग्य में उन्नति, धन प्राप्ति, परिवार को सुख देगा

कोर्ट कचहरी से निपटारा
प्रेम विवाह में आ रही हो बाधा
संतान विवाह एवं संधि
फिल्मी दुनिया में भविष्य
राजनीति कैरियर
गृह वास्तु दोष निवारण
रत्न धारण हेतु संपर्क करें
09630212111



श्री राधेय

ज्योतिष कार्यालय
(भोपाल) इंदौर



Astrologer
Radhey Sharma

नीलम रत्न

कब क्यों कैसे करें धारण जानिए महर्षि राधेय शास्त्री

नीलम रत्न शनि गृह का प्रतिनिधि रत्न है, यह एक अत्यंत प्रभावशाली रत्न होता है ! कहते हैं की यदि नीलम किसी भी व्यक्ति को रास आ जाए तो वारे न्यारे कर देता है , लेकिन आखिर इस तथ्य की पीछे क्या सिद्धांत है ? क्या वाक्य में नीलम धारण करने से वारे न्यारे हो सकते हैं और यदि हाँ तो कैसे ? दरअसल नीलम शनि गृह का रत्न है इसलिए शनि गृह सम्बंधित सभी विशेषताएं इसमें विद्यमान होती हैं, वैदिक ज्योतिष के अनुसार शनि का सम्बन्ध श्रम और मेहनत से होता है, ऐसा कहना बिल्कुल गलत होगा की शनि किसी जातक को बैठे बिठाए शोहरत दे देता है बल्कि जो जातक आलसी होता है उसे शनि का रत्न नीलम कभी भी रास नहीं आता यह रत्न तो मेहनती जातको के लिए है जो अपनी मेहनत और लगन से कामयाबी हासिल करते हैं! महर्षि राधेय शास्त्री

यदि आप आलसी हैं तो आपका नीलम धारण करना व्यर्थ होगा क्योंकि शनि के द्वारा कामयाबी तभी मिलती है जब जातक अत्यंत मेहनती होता है! यदि आप मेहनत करने से नहीं कतराते तो आप नीलम धारण कर सकते हैं और शनि देव का आशीर्वाद प्राप्त कर सकते हैं! लेकिन नीलम धारण करने से पहले कुंडली का निरीक्षण अत्यंत आवश्यक है क्योंकि मेरे अनुभव से केवल 5 से 10 प्रतिशत जातको को ही नीलम रत्न रास आता है! मेरे अनुभव से यह कहना भी ठीक नहीं होगा की नीलम धारण करने के कुछ क्षणों में शुभ या अशुभ प्रभाव दे देता है क्योंकि शनि एक अत्यंत धीमा गृह है यह लगभग 2.5 वर्ष तक एक ही राशि में भ्रमण करता है और 12 राशियों का चक्कर पूरा करने में इसे लगभग 30 वर्ष लगते हैं और किसी जातक के पूर्ण जीवन में अत्यधिक केवल 3 बार सभी राशियों का भ्रमण करता है जो की सभी ग्रहों की अपेक्षा सबसे कम है, अब आप स्वयं ही बताये की इतनी धीमी गति से चलने वाला गृह , कुछ क्षणों में कैसे प्रभाव दे सकता है! बेहतरीन नीलम जम्मू और कश्मीर की खानों में पाया जाता है जो आज के दौर में लगभग मिलना नामुमकिन है और यदि मिल भी जाये तो उसकी कीमत अदा करना हर किसी के बस की बात नहीं है! श्री लंका का नीलम भी बेहतरीन होता है और यह आसानी से उपलब्ध हो जाता है लेकिन यह भी एक महंगा रत्न होता है! इसकी कीमत 1000 रु कैरेट से लेकर 100000 रु कैरेट तक हो सकती है! अच्छे प्रभाव के लिए कम से कम 3000 रु कैरेट तक का नीलम धारण करना चाहिए !

श्री राधेय ज्योतिष कार्यालय भोपाल इंदौर 09630212111

ज्योतिष एवं यौन रोग 09630212111

“यौन रोग” एवं “नपुंसकता” के लिए कुंडली में ये ग्रह होते हैं जिम्मेदार

गुप्त रोग के बारे में ज्योतिष द्वारा जानकारी को पाने के बाद आपको अपने कई सवालों का जवाब मिल जाए। महर्षि राधेय शास्त्री जन्म पत्रिका में वृश्चिक राशि के प्रभाव से व्यक्ति गुप्तांग से जुड़े रोगों का शिकार हो जाता है। महर्षि राधेय शास्त्री जातक की कुंडली में अगर वृश्चिक राशि दूसरे, छठे, आठवें या बारहवें घर में हो और साथ ही इन सभी भावों पर अशुभ ग्रहों का प्रभाव भी हो, तब व्यक्ति को यौन और गुप्त रोग होने की आशंका रहती है। महर्षि राधेय शास्त्री

जन्मकुंडली में आठवां घर और उस घर के स्वामी ग्रह के साथ शुक्र, मंगल, शनि,

राहु का संबंध बन रहा हो, तो ऐसे जातक को एडस रोग हो जाने की आशंका होती है।

इसके अलावा यदि इसी भाव में शनि और राहु की दृष्टि शुक्र, केतु, मंगल और सूर्य पर हो, तो ऐसा व्यक्ति यौन संक्रमण का शिकार हो जाता है। यह योग जितना मजबूत होता चला जाता है, व्यक्ति की मृत्यु की आशंका उतनी ही बढ़ जाती है।

यदि किसी जातक की पत्रिका में सातवें घर में शनि, राहु का संबंध हो और सप्तेश पर इन

दोनों ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हो, तो ऐसे पुरुष को संतानोत्पत्ति में बाधा आती है।

शुक्र के साथ वृश्चिक लग्न के स्वामी मंगल पर भी शनि राहु की दृष्टि पड़ रही हो, तो ऐसा पुरुष नपुंसकता का शिकार हो जाता है। महर्षि राधेय शास्त्री

पुरुषों की कुंडली में शुक्र ग्रह की कमी हो जाती है, या फिर यह ग्रह पीड़ित हो जाए या

कमजोर हो जाए, तो ऐसे व्यक्ति को गुप्त रोग आसानी से जकड़ लेते हैं। महर्षि राधेय शास्त्री

ग्रहों का ऐसा मिलन से शुक्र की कमी होती है

देखिये सातवें घर में शनि राहु बैठे हों, सातवें घर के स्वामी पर शनि एवं

राहु की क्रूर दृष्टि हो या शनि के साथ नीच का शुक्र हो तब पुरुषों में शुक्र की कमी होती है।

ऐसा व्यक्ति किसी भी तरह के गुप्त रोग से पीड़ित हो सकता है। या तो उसे संतानोत्पत्ति

में तकलीफ हो सकती है या फिर इस योग के और मजबूत हो जाने से वह नपुंसकता का शिकार भी हो सकता है।

ज्योतिष द्वारा रोगोपचार के लिए

यदि स्त्री की कुंडली में हो

संपर्क करें 09630212111

उपरोक्त बताया गया यही योग यदि किसी स्त्री की कुंडली में हो, तो ऐसी स्त्री को गर्भाशय में परेशानी रहती है

जिससे संतान प्राप्ति में परेशानी आती है। कई बार ग्रहों की दशा बदलने से ऐसी स्त्री गर्भधारण कर भी लेती है,

लेकिन कुछ ही समय के भीतर उसका गर्भपात हो सकने की आशंका रहती है।

श्री राधेय शास्त्री कार्यालय
भोपाल

गुप्त रोग के उपचार

में राधेय शास्त्री योन रोग के उपचार लेकर आया हूँ नपुंसकता की दशा में इन रोगियों के लिए सबसे पहले शुक्र को प्रबल बनाने के लिए उत्तम क्वालिटी का शुक्र रत्न हीरा धारण करवाना चाहिए साथ ही शुक्र की अशुभता दूर करने के लिए शुक्र संबंधित वस्तुओं का दान करना चाहिए अगर हीरा के साथ पुखराज को धारण किया जाए तो इन्हें विशेष लाभ मिलता है अगर नपुंसकता के पीछे बुध शनि का हाथ हो तो इन ग्रहों से संबंधित रत्न भी धारण करना चाहिए यद्यपि बुद्ध और शुक्र के रत्न एक साथ धारण नहीं करना चाहिए क्योंकि बुध और शुक्र के मध्य जन्मजात शत्रुता मानी गई है कुण्डलियों से पता चलता है कि यौन संसर्ग के मामलों में जो पुरुष स्वयं को फिसड़ी अनुभव करते हैं अगर वह पुरुष अपने दाहिने हाथ की उंगली में उपयुक्त वजन का दोष रहित हीरा पहन लें तो निश्चित ही कुछ दिनों के भीतर वह स्वयं को यौन क्रीड़ा के लिए परिपूर्ण अनुभव करने लगेंगे अर्थात् उपयुक्त वजन का दोष रहित हीरा धारण करने से वह पूर्ण सक्षम पौरुष अनुभव करने लगते हैं इसी तरह सेक्स के मामले में रहित महिलाओं को भी अगर उनके बाएं हाथ की अनामिका उंगली में हीरा जड़ित अंगूठी पहना दी जाए तो उनकी जिंदगी में भी बहार खिल उठेगी कुंडली में शुक्र के नीच अथवा शत्रु राशि में स्थित रहने से सेक्स चमड़ी के रोगों के साथ-साथ शुक्राणुओं की संख्या में कमी लिंगोत्थान की कमी जैसी स्थिति बनने लगती है ऐसी सभी स्थितियों में हीरा पहनना अनुकूल रहता है यदि आप हीरा पहनने में सक्षम नहीं हैं तो औदुब्ध नामक जड़ी का तरीके से उपचार करे

ज्यादा जानकारी के लिए संपर्क करें महर्षि राधेय शास्त्री

ज्यादातर महिलाओं को इन बीमारियों का सामना क्यों करना पड़ता है

कुंडली में कमजोर या अशुभ चंद्र, लग्न भाव, लग्न भाव का स्वामी और लग्न के कारक ग्रह के अशुभ होने से कई बीमारियों के योग बनते हैं। गर्भपात, तनाव, शारीरिक कमजोरी आदि रोग के पीछे ग्रह दोष भी कारण हो सकते हैं। महर्षि राधेय शास्त्री

ज्योतिष द्वारा उपचार हेतु संपर्क करें

स्त्री की कुंडली में शनि और मंगल का योग हो और उन पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि भी पड़ रही हो तो इस योग से रक्त संबंधी गंभीर बीमारी हो सकती है। महर्षि राधेय शास्त्री

कमजोर या पीड़ित चंद्र के कारण मानसिक तनाव बना रहता है। महर्षि राधेय शास्त्री

यदि चंद्रमा पर पाप एवं क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो, मंगल और शनि की युति हो या एक-दूसरे पर दृष्टि हो, षष्ठम भाव कमजोर हो तो स्त्रियों को ये बीमारियां हो सकती हैं।

अगर चंद्रमा क्रूर और पाप ग्रहों जैसे शनि, मंगल, राहु या केतु से पीड़ित हो रहा हो तो महिला को पीरियड्स संबंधी परेशानियां हो सकती हैं।

चंद्रमा स्त्री का प्रतिनिधि ग्रह है। यदि चंद्रमा पाप ग्रह के प्रभाव में हो या बलहीन हो या द्वादश, अष्टम अथवा छठे भाव में हो तो स्त्री पर नकारात्मकता हावी रहती है।

स्त्री की कुंडली में पंचम भाव पर पाप और क्रूर ग्रहों की दृष्टि और ग्रहों युति पर ध्यान देना चाहिए। यदि पांचवें भाव पर सूर्य, शनि, राहु, केतु या मंगल हो तो ऐसी स्थिति में स्त्री को गर्भ धारण में समस्या हो सकती है।

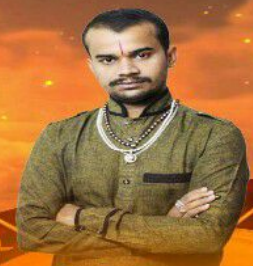
यदि पंचम भाव में सूर्य की युति शनि, राहु या केतु के साथ हो तो स्त्री का गर्भपात हो सकता है।

कोर्ट कचहरी से निपटारा
प्रेम विवाह में आ रही हो बाधा
संतान विवाह एवं संधि
फिल्मी दुनिया में भविष्य
राजनीति कैरियर
गृह वास्तु दोष निवारण
रत्न धारण हेतु संपर्क करें
09630212111



श्री राधेय

ज्योतिष कार्यालय
(भोपाल) इंदौर



Astrologer
Radhey Sharma



[१]मानसिक-शारीरिक परेशानी [२]आर्थिक-व्यावसायिक-रोजगार-उन्नति में रुकावट - किसी द्वारा व्यवसाय बंधित करना सम्बन्धी परेशानी
[३]सट्टा-लाटरी-शेयर-कमोडिटी-सेल्स से जुड़े लोगो में उन्नति-सफलता की समस्या
[४]पारिवारिक कलह -क्लेश ,मनमुटाव -मतभेद
[५]पति-पत्नी में मतभेद ,क्लेश ,विच्छेद की स्थिति [६]पति-पत्नी के किसी अन्य से सम्बन्ध या आशंका के कारण पारिवारिक विघटन-क्लेश-की स्थिति
[७]अधिकारी अथवा अन्य द्वारा उत्पीडन , नौकरी में उन्नति ,शांति- सफलता
[८]साझेदारी के विवाद ,व्यावसायिक विवाद[९]संतान सम्बन्धी समस्या यथा संतान हीनता ,संतान का बिगड़ल हो जाना
[१०]वायव्य बाधा [भूत-प्रेत],तांत्रिक क्रिया , अभिचार,किये -कराये सम्बन्धी समस्या
[११]ग्रह बाधा ,पित्र दोष [१२]घर-परिवार-व्यक्ति पर नकारात्मक उर्जा / शक्ति का प्रभाव
[१३]विवाह बाधा ,प्रेम विवाह ,आदि आदि[१४]किसी प्रकार की पारलौकिक समस्या
[१५]शत्रु -विरोधी ,मुकदमा -विवाद ,संपत्ति विवाद ,अवैध कब्ज़ा सम्बन्धी परेशानी
इनके अतिरिक्त हम विभिन्न क्षेत्र से जुड़े लोगो हेतु विशिष्ट कवच-यंत्रादी का भी निर्माण करते हैं जिससे उनकी सफलता सम्बंधित क्षेत्र में बढ़जाय ,
यथा बगलामुखी यन्त्र ,श्री विद्या षोडशी यन्त्र ,महाकाली यन्त्र , दक्षिणकाली यन्त्र ,
श्मशान काली यन्त्र ,गणपति यन्त्र पन्द्रहिया यन्त्र , बीसा यन्त्र , मुकदमा विजय यन्त्र ,
महामृत्यंजय यन्त्र , महालक्ष्मी यन्त्र , सर्वतोभद्र यन्त्र ,चिंतामणि तंत्र ,
वायव्य बाधा रोधक यन्त्र,श्वेतार्क गणपति ,दिव्य गुटिका आदि आदि ।

उपरोक्त सभी समस्याओं का हल तंत्र और ज्योतिष द्वारा संभव हो जाता है ।
अपनी कुंडली का परीक्षण करवाकर समस्याओं का समाधान प्राप्त करे
परन्तु ये ध्यान रखे सभी सेवाएं सशुल्क है
सम्पर्क सूत्रः श्री राधेय ज्योतिष कार्यालय

09630212111

मोती रत्न के बारे में राशि अनुसार जानकारी महर्षि राधेय शास्त्री

मेष राशि :- इस राशि के व्यक्ति यदि मोती धारण करते हैं तो उन्हें मानसिक शान्ति, विद्या सुख, गृह सुख और मातृ सुख का भरपूर लाभ मिलता है। यदि मोती को मंगल के रत्न मूंगा के साथ धारण किया जाये तो विशेष धन का लाभ होने लगता है।

वृष राशि :- इस राशि के व्यक्ति को मोती कभी भी धारण नहीं करना चाहिए। यह शुभ फलदायक नहीं है।

मिथुन राशि :- इस राशि के व्यक्ति को विशेष परिस्थितियों में मोती धारण करना लाभदायक हो सकता है। चन्द्रमा की दशा में मोती धारण करे तो उन्हें आर्थिक लाभ हो सकता है। मिथुन के लिए चन्द्रमा अशुभ भी है। इसे किसी ज्योतिषी से परामर्श करके धारण करें।

कर्क राशि :- इस राशि के व्यक्ति के लिए मोती अति शुभ कारक रहेगा। मोती धारण करने से स्वास्थ्य तथा आर्थिक पहलू पर नियंत्रण रहेगा। इनके जीवन में विनम्रता बनाए रखने में सक्षम होगा। आर्थिक दृष्टिकोण से लाभकारी होगा।

सिंह राशि :- इस राशि का व्यक्ति मोती धारण कर सकता है। आंखों के रोगों को दूर करेगा। रक्त सम्बंधित रोगों को दूर करेगा। धन में वृद्धि करेगा। पिता को मानसिक शान्ति प्रदान करेगा। नींद अच्छी आएगी। पुत्र को मृत्यु से बचायेगा।

कन्या राशि :- इस राशि व्यक्ति यदि मोती धारण करे तो आर्थिक लाभ, यश प्राप्ति, सन्तान का सुख प्राप्त होगा। तथा कल्याणकारी साबित होगा।

तुला राशि :- इस राशि के व्यक्ति के लिए मोती धारण करना शुभ तथा लाभकारी भी है। मोती धारण करने से राज्य कृपा, अचानक धन प्राप्त, यश, पद-प्रतिष्ठा तथा समाज का गौरव प्राप्त होगा।

वृश्चिक राशि :- इस राशि वालों के लिए मोती धारण करना अति लाभकारी है। इसके प्रभाव से चमत्कारिक रूप से भाग्य में उन्नति, धार्मिक भावना प्रबल होगी। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वह सुख का अनुभव करेगा।

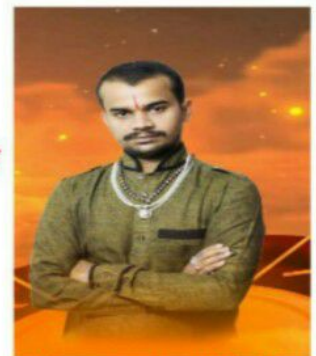
धनु राशि :- मोती धारण करना इस राशि वालों के लिए अति अशुभ होगा। इसका कारण मोती चन्द्रमा के बल को बढ़ाएगा जो इस राशि वालों के लिए हानि कारक सिद्ध होगा।

मकर राशि :- इस राशि वालों के लिए अपने जीवन काल में मोती कभी भी धारण नहीं करना चाहिए। स्वास्थ्य हानि तथा पति-पत्नी में वैमनस्यता बढ़ेगी।

कुम्भ राशि :- इस राशि के लोगों को मोती धारण नहीं करना चाहिए क्योंकि यह धन, यश, संपत्ति को नष्ट करेगा। अचानक शत्रु बढ़ेंगे।

मीन राशि :- इस राशि के व्यक्ति को मोती अवश्य धारण करना चाहिए वह उसे सदैव यश प्रदान करेगा। बुद्धि लाभ, भाग्य उदय, विद्या की प्राप्ति, पुत्र के सुख की प्राप्ति व अन्य चमत्कारी लाभ देगा.....

[१] मानसिक-शारीरिक परेशानी [२] आर्थिक-व्यावसायिक-रोजगार-उन्नति में रुकावट -
किसी द्वारा व्यवसाय बंधित करना सम्बन्धी परेशानी
[३] सट्टा-लाटरी-शेयर-कमोडिटी-सेल्स से जुड़े लोगों में उन्नति-सफलता की समस्या
[४] पारिवारिक कलह -क्लेश, मनमुटाव -मतभेद
[५] पति-पत्नी में मतभेद, क्लेश, विच्छेद की स्थिति [६] पति-पत्नी के किसी अन्य से सम्बन्ध
या आशंका के कारण पारिवारिक विघटन-क्लेश-की स्थिति
[७] अधिकारी अथवा अन्य द्वारा उत्पीड़न, नौकरी में उन्नति, शांति- सफलता
[८] साझेदारी के विवाद, व्यावसायिक विवाद [९] संतान सम्बन्धी समस्या यथा संतान
हीनता, संतान का बिगड़ल हो जाना
[१०] वायव्य बाधा [भूत-प्रेत], तांत्रिक क्रिया, अभिचार, किये-कराये सम्बन्धी समस्या
[११] ग्रह बाधा, पित्र दोष [१२] घर-परिवार-व्यक्ति पर नकारात्मक उर्जा / शक्ति का प्रभाव
[१३] विवाह बाधा, प्रेम विवाह, आदि आदि [१४] किसी प्रकार की पारलौकिक समस्या
[१५] शत्रु-विरोधी, मकदमा-विवाद, संपत्ति विवाद, अवैध कुब्जा सम्बन्धी परेशानी



समर्पक सूत्रः श्री राधेय ज्योतिष कार्यालय

उपरोक्त सभी समस्याओं का हल तंत्र और ज्योतिष द्वारा संभव हो जाता है । 09630212111

पुखराज देता है लाभ श्री राधेय ज्योतिष कार्यालय भोपाल

इसका लाभ यह है कि इससे नींद अच्छी आती है और शरीर की थकावट दूर होती है। इससे लोगों का क्रोध और आक्रोश भी कम होता है, साथ ही इसे धारण करने से लोग दयालु और दिलदार भी बनते हैं। इसे प्यार और स्नेह का चिन्ह माना जाता है इससे अस्थमा, पागलपन, इंसोमनिया जैसी समस्याओं का समाधान होता है। इससे आर्थिक संपन्नता बढ़ती है।

अध्यात्म विद्या में यह माना जाता है कि पुखराज शांतिचित्त, बहते रक्त को रोकने वाला व भूख बढ़ाने वाला रत्न है। इसे धारण करने से दुख, चिंता, तनाव, डर आदि मन से दूर होते हैं। अचानक से होने वाली मृत्यु के लिए ये पहले ही आगाह कर देता है। इससे आदमी हैंडसम हो जाते हैं और बाँझ औरतें गर्भवती। यह नवंबर के महीने का रत्न माना जाता है। इसके साथ तो यह भी धारणा है कि आप उबलते हुए पानी में पुखराज डालिए और फिर अपना हाथ डालकर निकाल लीजिए और आप पाएँगे कि आपका हाथ बिल्कुल नहीं जला।

अठारहवीं सदी में इन रत्नों को खोजने के लिए साइबीरिया या ब्राजील जाना पड़ता था। जहाँ ये एक-एक सेंटीमीटर के साइज में मिलते थे। पुर्तगाल से मिले बेहद खूबसूरत पुखराज ब्रगांजा को बहुत समय तक हीरा समझा जाता था। इसका वजन 1680 कैरट है। पहले के जमाने में राजा महाराजाओं की शान माना जाता था पुखराज। लेकिन फिर पीले स्वर्ण पुखराज के महँगे दामों के चलते इसकी जगह स्वर्ण पुखराज ने ले ली इसलिए अब स्वर्ण पुखराज को पुखराज का विकल्प माना जाता है, क्योंकि यह हर जगह उपलब्ध होता है और इसका दाम भी कम होता है। ज्यादातर लोग तो स्वर्ण पुखराज को ही असली पुखराज समझते हैं।

हाल ही में नीला पुखराज बहुत अधिक प्रसिद्ध हुआ है। सिल्वर पुखराज चमकदार, पारदर्शी रत्न होता है। इसका मूल्य कम होने के कारण ये बाकी अन्य रत्न जैसे हीरा और सफेद नीलमणि का विकल्प बन सकता है। नई फैक्ट्री, मकान एवं दुकान बनाते समय, वास्तु को अपनाने से सभी प्रकार के सुख एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के जातकों का गुण एवं स्वभाव

नक्षत्र देवता: अर्यमा

नक्षत्र स्वामी: सूर्य

09630212111

श्री राधेय ज्योतिष कार्यालय

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति युद्ध विद्या में निपुण, लड़ाकू एवं साहसी होता है। आप देश और समाज में अपने रौबीले व्यक्तित्व के कारण पहचाने जाते हैं।

उत्तराफाल्गुनी जातक दूसरों का अनुसरण नहीं करते अपितु लोग उनका अनुसरण करते हैं। आपमें नेतृत्व के गुण जन्म से ही होते हैं अतः आप अपना कार्य करने में खुद ही सक्षम होते हैं। इस नक्षत्र में जन्मा जातक दूसरों के इशारों पर चलना पसंद नहीं करता। यह लोग सिंह की भाँती अकेले ही अपना शिकार खुद करते हैं। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र जातक राजा समान भोगी एवं पर स्त्री में रूचि रखने वाले होते हैं। चन्द्रमा के प्रभाव में यदि हो तो जातक विद्या बुद्धि से युक्त धनी एवं भाग्यवान होता है। उत्तराफाल्गुनी जातक मित्र बनाने के लिए तत्पर सदैव तत्पर रहते हैं। मित्रों की सहायता करने तथा उनसे सहायता प्राप्त करने में भी यह संकोच नहीं करते हैं। आप मित्रों को बहुत महत्व देते हैं। मित्रता के सम्बन्ध में भी इनके साथ यह बातें लागू होती हैं, ये जिनसे दोस्ती करते हैं उसके साथ लम्बे समय तक मित्रता निभाते हैं। उदारता तथा दूसरों की सहायता करना आपके स्वभाव में ही है। आप अतिथितियों के आदर सत्कार में कभी कोई कमी नहीं छोड़ते हैं। आप बुद्धिमान होने के साथ साथ व्यवहार कुशल एवं हास्य प्रेमी भी हैं। अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण आप सभी क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने में सक्षम होते हैं। आपके लिए व्यापार एवं व्यवसाय या अन्य निजी कार्य करना लाभप्रद नहीं होता है। जो व्यक्ति उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में पैदा होते हैं वे स्थायित्व में यकीन रखते हैं, इन्हें बार बार काम बदलना पसंद नहीं होता है। ये जिस काम में एक बार लग जाते हैं उस काम में लम्बे समय तक बने रहते हैं। इनके स्वभाव की विशेषता होती है कि ये स्वयं सामर्थवान होते हुए भी दूसरों से सीखने में हिचकते नहीं हैं। अपने स्वभाव की इस विशेषता के कारण ये निरंतर प्रगति की राह पर आगे बढ़ते हैं।

उत्तराफाल्गुनी जातक आर्थिक रूप से सामर्थवान होते हैं क्योंकि दृढ़विश्वास एवं लगन के साथ अपने लक्ष्य को हासिल करने हेतु तत्पर रहते हैं

पारिवारिक जीवन के सम्बन्ध में देखा जाए तो ये अपनी जिम्मेदारियों का पालन अच्छी तरह से करते हैं।

विशेषताएं

प्रथम चरण : इस चरण का स्वामी सूर्य हैं। इस नक्षत्र में जन्मा जातक पंडित अर्थात् अपने क्षेत्र का विद्वान् होगा इसका कारक इस चरण का नवांशेश गुरु है। नक्षत्र स्वामी एवं सूर्य दोनों ही विद्या के लिए शुभ गृह है। दोनों का चन्द्र पर प्रभाव जातक को पंडित बनाएगा। मंगल की दशा अन्तर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। गुरु की दशा शुभ फल देगी।

द्वितीय चरण : इस चरण का स्वामी शनि हैं। इस नक्षत्र में जन्मा जातक राजा या राजा समान वैभवशाली एवं पराक्रमी होता है। लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

तृतीय चरण : इस चरण का स्वामी शनि हैं। इस नक्षत्र में यदि चन्द्रमा भी है तो व्यक्ति हर हाल में अपने शत्रुओं पर विजयी होगा तथा प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करेगा। लग्नेश बुध की दशा अच्छा फल देगी, शनि अनिष्ट फल नहीं देगा अपिटी शुक्र व शनि की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

चतुर्थ चरण : इस चरण का स्वामी गुरु हैं। इस नक्षत्र में जन्मा जातक धार्मिक स्वभाव वाला, अपने संस्कारों के प्रति आस्थावान एवं सभ्य होगा। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा एवं बृहस्पति की दशा उत्तम फल देगी।

ज्योतिष द्वारा समस्त बीमारियों का उपचार किया जा सकता है मैडिसन के साथ आयुर्वेदिक उपचार जरूर लें ताकि आपका रोग पूर्ण तरीके से समाप्त हो

Dr. Jyoti Singh

Dr. Jyoti Singh

Dr. Jyoti Singh

Dr. Jyoti Singh

**कालसर्प योग पूजा, मंगल गृह
शांति विशेषज्ञ, नौकरी, संतान,
पदोन्नति, स्थानांतरण, कोर्ट केस,
शिक्षा की दीक्षा, राजनीतिक,
भविष्य, फिल्म जगत में भविष्य,
रत्न धारण एवं वास्तु शांति**



प्रेम विवाह एवं मनपसंद शादी राधेय शास्त्री

झाड़ियां व दाद - बेसन, दूध, दही सरसों के तेल में मिलाकर मलने से झाड़ियां व बेसन, हल्दी, सरसों, का तेल मिलाकर उबटन करने के बाद पानी से धोने से दाद ठीक होती है - मूंग पानी में भिगोए पानी सूखने पर वह बाद में मले

स्कीन से जुड़ी बीमारियां भी कई बार गंभीर समस्या बन जाती है। ऐसी ही एक समस्या है एकजीमा या दाद पर होने वाली खुजली और जलन दाद से पीड़ित व्यक्ति का जीना मुश्किल कर देती है। अगर आपके साथ भी कुछ ऐसा ही है तो अपनाएं ये आयुर्वेदिक टिप्स

- दाद पर अनार के पत्तों को पीसकर लगाने से लाभ होता है।
- दाद को खुजला कर दिन में चार बार नींबू का रस लगाने से दाद ठीक हो जाते हैं।
- केले के गुदे में नींबू का रस लगाने से दाद ठीक हो जाता है।
- चर्म रोग में रोज बथुआ उबालकर निचोड़कर इसका रस पीएं और सब्जी खाएं।
- गाजर का बुरादा बारीक टुकड़े कर लें। इसमें सेंधा नमक डालकर सेंके और फिर गर्म-गर्म दाद पर डाल दें।
- कच्चे आलू का रस पीएं इससे दाद ठीक हो जाते हैं।
- नींबू के रस में सूखे सिंघाड़े को घिस कर लगाएं। पहले तो कुछ जलन होगी फिर ठंडक मिल जाएगी, कुछ दिन बाद इसे लगाने से दाद ठीक हो जाता है।
- हल्दी तीन बार दिन में एक बार रात को सोते समय हल्दी का लेप करते रहने से दाद ठीक हो जाता है।
- दाद होने पर गर्म पानी में अजवाइन पीसकर लेप करें। एक सप्ताह में ठीक हो जाएगा।

रत्नों का चुनाव

अनिष्ट ग्रहों के प्रभाव को कम करने के लिए या जिस ग्रह का प्रभाव कम पड़ रहा हो उसमें वृद्धि करने के लिए उस ग्रह के रत्न को धारण करने का परामर्श ज्योतिषी देते हैं।

एक साथ कौन-कौन से रत्न पहनने चाहिए, इस बारे में ज्योतिषियों की राय है कि,

माणिक्य के साथ

नीलम, गोमेद, लहसुनिया वर्जित है।



मोती के साथ

हीरा, पन्ना, नीलम, गोमेद, लहसुनिया वर्जित है।



मूंगा के साथ

पन्ना, हीरा, गोमेद, लहसुनिया वर्जित है।



पन्ना के साथ

मूंगा, मोती वर्जित है।



पुखराज के साथ

हीरा, नीलम, गोमेद वर्जित है।



हीरे के साथ

माणिक्य, मोती, मूंगा, पुखराज वर्जित है।



नीलम के साथ

माणिक्य, मोती, पुखराज वर्जित है।



गोमेद के साथ

माणिक्य, मूंगा, पुखराज वर्जित है।



लहसुनिया के साथ

माणिक्य, मूंगा, पुखराज, मोती वर्जित है।



रत्न का मोल

श्री राधेय ज्योतिष कार्यालय भोपाल

कुटली फलादेश, प्रेम विवाह हेतु कोर्ट कचहरी या अन्य बीमारी सभी समस्याओं का समाधान प्राप्त करने हेतु संपर्क करें

इस रत्न का मोल बहुत ही समझदारी से करना चाहिए। इस रत्न को रंगत देकर कई व्यापारी बहुत ही कीमत में बेचते हैं। इसके वास्तविक कीमत रंग, गुणवत्ता, पारदर्शिता व वजन के हिसाब से तय होती है। पुखराज के साथ अन्य रत्न पहनने से पहले किसी योग्य ज्योतिष की सलाह अवश्य लें। महर्षि राधेय शास्त्री **09630212111**

केतु ग्रह शान्ति के उपाय

09630212111

यदि आपकी जन्म कुण्डली में केतु अशुभ फल दे रहा हो तो निम्न उपाय करने से उसकी अशुभता में कमी लायी जा सकती है।

वैदिक मंत्र-

ॐ केतु कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्याऽपेशसे। समुषभ्दिरजायथाः॥

पौराणिक मंत्र-

ॐ पलाश पुष्प सकाशं तारका ग्रह मस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥

तंत्रोक्त मंत्र-

ॐ सौ, सौ, सौ, सः केतवे नमः।

केतु गायत्री-

ॐ पद्म पुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतु प्रचोदयात्॥

जप संख्या- 17600

रत्न-

केतु हेतु लहसुनिया रत्न पंचधातु की अंगुठी में विधिवत् धारण करनी चाहिए।

दान हेतु वस्तुएं-

लोहा, बैकरी, नारियल, तिल, सप्तधान्य, धूम्र वर्ण का वस्त्र, लोहे का चाकू, कपिला गाय दक्षिणा सहित दान करनी चाहिए।

अन्य उपाय-

श्री गणेश जी की उपासना, कुत्तों को चपाती देना, पक्षियों को दाना देना लाभकारी होता है।

ज्योतिष मार्तण्ड महर्षि राधेय शास्त्री (भोपाल)

OFFICE

RAKSHATRA GEMS C-514 PUSHPA
NAGAR COLONY 80 FIT ROAD
ASHOKA GARDEN BPL



*bitthan market
metro plaza
S5*

*Astrologer
Radhey Sharma
From Bhopal*

चांदी की चेन में हर्निया रोगोपचार के लिए
धारण करें। महर्षि राधेय शास्त्री

मोती और पुखराज

ज्योतिष द्वारा हर्निया रोगोपचार के लिए संपर्क करें
श्री राधेय ज्योतिष कार्यालय भोपाल इंदौर

09630212111

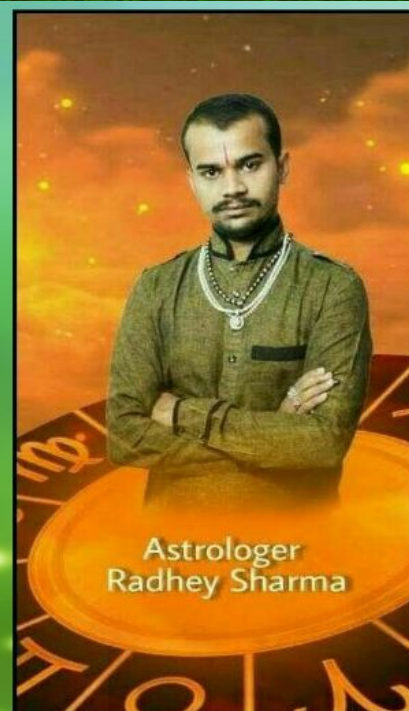


कूकर खांसी मिटाने के लिए धारण करें

तांबे की चेन

ज्योतिष द्वारा अन्य रोगों के निवारण हेतु संपर्क करें
श्री राधे ज्योतिष कार्यालय इंदौर भोपाल

09630212111



वात पित्त और कफ रोग हेतु संपर्क करें
घरेलू रोग उपचार

Astrologer Radhey Sharma
9630212111



ज्योतिष
द्वारा

आयुर्वेद पद्धति में रोग निदान के मुख्यतः तीन आधार हैं
यह तीन सूत्र हैं
वात पित्त और कफ

आयुर्वेद पद्धति में इन्हें दोष माना गया है
इन्हीं त्रिदोष के न्यूनाधिक प्रकोप से रोग उत्पत्ति होती है
आयुर्वेद में सूर्य देव पित्र उत्पादक ग्रह माने गए हैं चंद्रदेव कफ और शनि उत्पादक ग्रह माने गए
निदेव वात दोस्त की सृष्टि करने वाले माने गए हैं यहां भी इन तीनों कारक ग्रह के सहयोगी ग्रह
जैसे शनि गुरु बुध और राहु वात
शुक्र और चंद्र कफ एवं सूर्य
केतु और मंगल पर उत्पन्न करने वाले ग्रह माने गए

मात्र ₹5000 में क्लास ज्वाइन कीजिए

इस कोर्स में एडमिशन के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करें।

Mob- +91 9630212111

ज्योतिष मर्मज्ञ महर्षि राधेय शास्त्री

समस्या है तो समाधान है